International Journal of Applied and Universal Research **E-ISSN No: 2395-0269**
Volume XI, Issue VI, Nov- Dec 2024 **Available online at: www.ijaur.com**
Impact Factor- 5.991

जैविक कृषि के विपणन की स्थिति का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन (नरसिंहपुर जिले के विशेष सन्दर्भ में)

शैलेन्द्र लोधी[1] और डॉ. अधिकेश राय[2]
1. शोध छात्र वाणिज्य शा. पी. जी. कालेज नरसिंहपुर (म.प्र.)
2. शोध निर्देशक वाणिज्य शा. पी. जी. कालेज नरसिंहपुर (म.प्र.)

शोध सारांश –: जैविक खेती कृषि की वह विधा है, जिसमें मृदा को स्वस्थ व जीवन्त रखते हुए केवल जैव अवषिष्ट, जैविक या जीवाणु खाद के प्रयोग से प्रकृति के साथ समन्वय रखकर टिकाऊ फसल का उत्पादन किया जाता है। जैविक खेती (ऑर्गेनिक फार्मिंग) कृषि की वह विधि है जो संश्लेषित उर्वरकों एवं संश्लेषित कीटनाशकों के अप्रयोग या न्यूनतम प्रयोग पर आधारित है, तथा जो भूमि की उर्वरा शक्ति को बचाये रखने के लिये फसल चक्र, हरी खाद, कम्पोस्ट आदि का प्रयोग करती है। सन् 1990 के बाद से विश्व में जैविक उत्पादों का बाजार आज काफी बढ़ा है। जैविक खेती वह सदाबहार पारंपरिक कृषि पद्धति है, जो भूमि का प्राकृतिक स्वरूप बनाने वाली क्षमता को बढ़ाती है। जैविक खेती किसानों के स्वावलम्बन की अभिनव योजना है। इसका मुख्य उदेश्य किसानों की आय को दोगुना कर जैविक खेती का प्रशिक्षण, प्रोत्साहन, तथा देश में किसानों को स्वावलम्बी बनाना है। जैविक खेती पर्यावरणीय समस्याओं का समाधान है। संपूर्ण विश्व में बढ़ती हुई जनसंख्या एक गंभीर समस्या है, बढ़ती हुई जनसंख्या के साथ भोजन की आपूर्ति के लिए मानव द्वारा खाद्य उत्पादन की होड़ में अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए तरह–तरह की रासायनिक खादों, जहरीले कीटनाशकों का उपयोग, प्रकृति के जैविक और अजैविक पदार्थो के बीच आदान–प्रदान के चक्र को (इकोलॉजी सिस्टम) प्रभावित करता है, जिससे भूमि की उर्वरा शक्ति खराब हो जाती है, साथ ही वातावरण प्रदूषित होता है तथा मनुष्य के स्वास्थ्य में गिरावट आती है। कृषि के उन्नत के साथ कृषि विपणन व्यवस्था का उन्नत होना आवश्यक है, क्योंकि यह अनुभव किया जाने लगा है कि कृषि उत्पादों के विपणन का उतना ही महत्व है जितना स्वतः उत्पादन का वस्तुतः विपणन की क्रिया का अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका होती है, क्योंकि इसके द्वारा उपभोग और उत्पादन में सन्तुलन ही नही वरन् अधिक विकास का स्वरूप भी निर्धारित होता है।

मुख्यशब्द :– जैविक कृषि, जैविक उर्वरक, विपणन, अर्थव्यवस्था, विश्लेषण, नरसिंहपुर ।

प्रस्तावना –

भारतीय अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि आधारित अर्थव्यवस्था है। भारत में अनेक उद्योग कच्चे माल के लिये कृषि पर निर्भर करते है, कृषि निजी क्षेत्र का सबसे बडा असंगठित व्यवसाय है। भारतीय अर्थव्यवस्था ग्राम प्रधान होने के कारण कृषि यहाँ के लोगों का आजीविका का मुख्य साधन है। यहां लगभग 60 प्रतिशत जनसंख्या कृषि पर निर्भर करती है। इस प्रकार कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था में जीवन रेखा है, या रीढ है।

जैविक कृषि परम्परागत कृषि का नया नाम जैविक कृषि है जिसके अन्तर्गत कृषि को रसायनों से मुक्त कर प्राकृतिक संसाधनों की सहायता से कृषि कार्य करना है जिसमें गोवर खाद, केंचुआ खाद, वर्मीकम्पोस्ट, व जैविक कीटनाशकों का उपयोग किया जाता है। ''जैविक कृषि वह सदाबहार कृषि पद्धति है जो यर्थात में पर्यावरण की शुद्धता को यथावत स्थापित रखती है।'' इसमें रासायनों का उपयोग बिल्कुल नही होता और कम लागत मे गुणवत्ता पूर्ण उत्पादन होता है। इस पद्धित में रासायनिक उर्वरकों रासायनिक कीटनाशकों व खरपतवार नाशकों आदि के स्थान पर गोबर की खाद, कम्पोस्ट, हरी खाद, बैक्टीरिया कल्चर जैविक खाद जैविक कीटनाशकों आदि का प्रयोग किया जाता है। जैविक कृषि समय की सबसे बडी जरूरत है। यूरोप, जापान, अमेरिका जैसे देशों में बच्चों में कैंसर के अधिक मामले आने पर अब पांच साल के बच्चों के लिये जैविक खाद्य पदार्थ अनिवार्य कर दिये है। जैविक कृषि का महत्व जैविक कृषि पद्धति का आर्थिक दृष्टि व प्राकृतिक दृष्टि से अधिक महत्व है। आर्थिक दृष्टि के अन्तर्गत कृषि लागतों में कमी आती है और उत्पादन में वृद्धि होती है तथा खाद्यान अधिक पौष्टिक होते है व खनिज तत्वों की मात्रा अधिक होती है जिसके परिणामस्वरूप बीमारियों में कमी आती है। मानव स्वास्थ पर अच्छा प्रभाव पडता है। पर्यावरण में व्याप्त प्रदूषण में कमी आती है तथा मानव पालन व कृषि मानव का तालमेल बढ़ता है।

भारत में जैविक कृषि की स्थिति–

भारत में अनेक राज्यों में कृषि पद्धति में बदलाव होता जा रहा है किसान जैविक कृषि कार्य करने को अपना मन बनाते

जा रहे है। सरकारें भी योजनाओं के माध्यम से जैविक कृषि पद्धति को अपनाने हेतु सार्थक प्रयास कर रही है। भारत में 2003–04 में जैविक खेती को लेकर गम्भीरता दिखाई गयी और 42000 हेक्टेयर, क्षेत्र पर जैविक कृषि की गयी। मार्च 2010 तक यह बढ़कर 10 लाख 80 हजार भूमि हो गयी है। वर्श 2021–22 के आंकडों के मुताविक भारत की 59.1 लाख हेक्टेयर भूमि पर होने वाले उत्पादों को प्रमाणिक तौर पर जैविक घोषित किया जा चुका है इसमें से 42.2 लाख हेक्टेयर तो वन भूमि है। जैविक खेती क्षेत्र के रूप में प्रमाणिक भूमि 14.9 लाख हेक्टेयर है। भारत में सिक्किम राज्य सौ फीसदी जैविक कृषि वाला राज्य बन गया है। वहां पर 75 हजार हेक्टेयर भूमि पर जैविक कृषि पद्धति के द्वारा कृषि की जा रही है। 12 वर्ष पहले पवन चांमलिंग की नेतृत्व वाली सरकार ने विधानसभा में घोषणा कर सिक्किम को भारत का पहला जैविक कृषि राज्य बनाने का फैसला लिया था। इसके बाद कृषि योग्य भूमि के रसायन उर्वरक के इस्तेमाल तथा कीटनाशकों की बिक्री को प्रतिबन्धित कर दिया था। आज भारत के अनेक राज्य जैविक कृषि कार्य कर रहे हैं। हालाकि प्रमाणिक जैविक खेती का सबसे अधिक मध्य प्रदेश में है। रकबे की दृष्टि से हिमाचल व राजस्थान का नम्बर दूसरा व तीसरा है। उड़ीसा, आन्ध्र प्रदेश, उत्तर प्रदेश आदि राज्यों ने भी बडी तेजी से भी कदम बढ़ा दिये है। सिक्किम की सहायता से प्रेरित केरल, मिजोरम और अरूणाचल प्रदेश भी पूर्ण जैविक कृषि राज्य होने की दौड़ में आगे दिखाई दे रहे है। जैविक खेती से कृषि लागत पर प्रभाव जैविक कृषि से कृषि लागत पर बहुत ही सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। रासायनिक खादों से जहां लागतों में वृद्वि होती है वही जैविक कृषि से 70 प्रतिशत लागतों में कमी आती है।

सामान्य तौर पर विपणन शब्द का तात्पर्य उन सभी विपणन कार्यों एवं सेवाओं के करने से है, जिनके द्वारा वस्तुएँ उत्पादक से अंतिम उपभेक्ता तक पहुंचती है, इसके अंतर्गत विपणन की सभी सहयोगी प्रक्रियाएँ एकत्रीकरण, पैकेजिंग, परिवहन, संग्रहण, श्रेणी चयन एवं मानकीकरण, वित्त जोखिम प्रबंध, विज्ञापन, आदि सम्मिलित होती है, उत्पादन को उपभोग से जोड़ने वाली श्रृंखला की समस्त कड़ियाँ विपणन में सम्मिलित होती हैं।

प्रो. थामसन के अनुसार :– कृषि विपणन के अध्ययन में वे सभी कार्य एवं कच्चामाल एवं संस्थाएं सम्मिलित होती हैं जिनके द्वारा कृषकों के फार्म पर उत्पादित खाद्यान्न, कच्चा माल एवं उनसे निर्मित माल का फार्म से उपभोक्ताओं तक संचालन होता हैं।

प्रो. अबोट के अनुसारः– कृषि विपणन से तात्पर्य उन सभी कार्यों से होता है, जिनके द्वारा खाद्य वस्तुएँ एवं कच्चा माल फार्म से उपभोक्ता तक पहुंचता है।

नरसिंहपुर जिले में भी कृषि विकास सम्बन्धी इन योजनाओं के क्रियान्वयन के साथ यहॉ की जर्जर अर्थव्यवस्था को सुधारने का प्रयास तो किया गया, और यहॉ कि वसुन्धरा को सुजलाम् सुफलाम् की सार्थक परिधि के लाने के लिए सिंचाई की अनेक योजनाओं के साथ तालाब, नहर, टयूबेल जैसी सिंचाई परियोजना का क्रियान्वयन हुआ।

कृषि के उन्नत के साथ कृषि विपणन व्यवस्था का उन्नत होना आवश्यक है, क्योंकि यह अनुभव किया जाने लगा है कि कृषि उत्पादों के विपणन का उतना ही महत्व है जितना स्वतः उत्पादन का वस्तुतः विपणन की क्रिया का अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका होती है, क्योंकि इसके द्वारा उपभोग और उत्पादन में सन्तुलन ही नही वरन् अधिक विकास का स्वरूप भी निर्धारित होता है।

जैविक कृषि विपणन की दशा का विश्लेषणात्मक अध्ययन (नरसिंहपुर जिले के विशेष संदर्भ में) विषय पर अभी तक शोध कार्य नहीं किया गया है। इस विषय कि सम्बन्धित महाकौशल क्षेत्र में जैविक कृषि विपणन पर डॉ0 ई.जकारिया के निर्देशन में डी.एस. तिवारी द्वारा शोध कार्य '' महाकौशल क्षेत्र में कृषि विपणन'' पर किया गया है, तथा डॉ0 श्रीमती दीपा श्रीवास्तव के निर्देशन में आर.पी. तिवारी द्वारा ''उदारीकरण के पश्चात् कृषि विपणन की दशा का आलोचनात्मक मूल्यांकन ''(रीवा जिले के विशेष संदर्भ में) विषय पर भी किया गया है।

चूँकि यह शोध कार्य मेरे शोध क्षेत्र सीमा के बाहर का तथा एक दशक पुराना हो चुका है, आज विपणन की समस्याएँ आवश्यकताएँ जहॉ की तहॉ बनी हुई है। अतः इस विषय पर नए सिरे से शोध कार्य की आवश्यकता को देखते हुए मैने नरसिंहपुर जिले में कृषि विपणन की दशा का चुनाव किया है, जिसमें कृषि क्षेत्र कृषि विपणन के विकास में बाधाएँ व उदासीनता पर नवीन शोध एंव सुझाव दिया जा सकेगा।

महाकौशल क्षेत्र में जैविक कृषि विपणन साहित्य पर सन् 1988 में तथा उदारीकरण के पश्चात् कृषि विपणन की दशा का आलोचनात्मक मूल्यांकन विषय पर 2010 में शोध कार्य किया गया है। पूर्व में इस विषय से सम्बन्धित कृषि विकास, कृषि विपणन, कृषि के प्रकार, कृषि से प्राप्त होने वाली आय, सिंचाई, कृषि औजार यंत्र आदि तथ्यों पर प्रकाश डाला गया है। शोध कार्य करते हुए कृषि विपणन का स्वरूप परिवर्तन

कृषि व्यापार एवं व्यवसाय से आय बढ़ाने के लिए सुझाव दिया गया है। कृषि विपणन के अन्तर्गत भण्डारण, विनिमय, क्रय–विक्रय के साथ–साथ उपभोग उत्पादन क्रियाओं को प्राथमिकता प्रदान की गई है। कृषि के सम्बन्धित अनेक क्रियाएँ संचालित होती है। शोधग्रंथ में कृषि उत्पादक तथा अन्तिम उपभोक्ता दोनों कड़ियो को जोड़ने का प्रयास किया गया है। परन्तु समीक्षा के बारे में कोई स्थान नहीं दिया गया है।

कृषि विपणन पद्धतियॉ तथा इसमें परिवर्तन प्रदेश के अन्य जिले में नरसिंहपुर जिले के कृषि विपणन का तुलनात्मक अध्ययन पर शोध कार्य कर कृषि भण्डारण, कृषि विपणन, कृषि परिवहन, कृषि नीति आदि सुविधायें प्रदान किये जाने के साथ ही कृषि विपणन व्यवस्था को विकसित किया जाएगा, इससे सम्बन्धित सुझावों को कृषि विपणन के पिछड़ेपन को दूर करना, उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि, कृषि विपणन तकनीक में सुधार कृषि उपज में वृद्धि एवं संग्रहण किये जाने का प्रयास करने के साथ–साथ कृषि विपणन के परम्परागत पद्धतियों के स्थान पर कृषि विपणन पद्धतियों में वर्तमान तकनीक उपलब्ध कराए जाने हेतु महत्वपूर्ण सुझाव दिए जायेगे, कृषि विपणन में परिवहन एवं यातायात का महत्वपूर्ण स्थान होता है।

नरसिंहपुर जिले को प्रदेश एवं देश के कृषि विपणन बाजार से जोड़ने हेतु आवश्यक सुझाव के साथ–साथ कृषि मूल्यों से सम्बन्धित महत्वपूर्ण नीति निर्धारित की जायेगी। कृषि विपणन भी उपर्युक्त महत्वपूर्ण तथ्यों के साथ–साथ कृषि उत्पादन का परिसंस्करण, कृषि परिसंस्करण हेतु प्रमुख नीतियो यथा 'कृषि' उत्पाद को सुखाना, विपणन के लिए उपलब्ध कराना एवं वित्तीय सुविधाएँ उपलब्ध कराए जाने का प्रयास किया जाएगा। शोध क्षेत्र के कृषि विपणन की अपार सम्भावनाएँ होते हुए भी यहॉ की कृषि विपणन भी व्यवस्था ठीक नहीं है।

पूर्व शोध की समीक्षाः–

कॉनराय एट आल (2001) भारत में ग्रामीण कृषक परिवारों के पास आय के साधन के पशु उपलब्ध है। राष्ट्रीय स्तर पर पशुधन की आबादी बढ़ी है हालांकि एक क्षेत्रीय पैमाने और अर्द्धशुष्क क्षेत्रों में विशेष रूप से स्थिति बहुत अलग और अधिक जटिल है, उदाहरण के लिए ग्रामीण क्षेत्र के भीतर पशुधन बढ़ी जाती है तथा शहरी क्षेत्रों में पशुधन की आबादी कम होती है। जिससे ग्रीमण किसानों की स्थिति सुधर रही है।

ब्रिजेन्द्र पाल सिंह (2000) भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ कृषि है। इसके विकास से अर्थव्यवस्था में दृढ़ता आती है। राष्ट्रीय आय में इसका योगदान 34 प्रतिशत के आसपास है। गत वर्षो में खाद्यान तथा व्यावसायिक फसलों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। कृषि उत्पादन को प्रभावित करने वाले तत्वों में प्राकृतिक और आर्थिक दोनो महत्वपूर्ण है। विगत दो–तीन दशकों में भारत में द्वितीयक क्षेत्र एवं तृतीयक क्षेत्र को तीव्र गति से विस्तार हुआ है प्रभावी देश की कार्यशील जनसंख्या का 52 प्रतिशत प्राथमिक क्षेत्र पर आश्रित है। देश में कृषि 115.5 मिलियन कृषक परिवारों की आजीविका का माध्यम है। यहाँ तक कि सकल राष्ट्रीय उत्पाद का लगभग 15 प्रतिशत भाग कृषि व उसकी सहायक क्रियाओं से प्राप्त होता है। भारत में अनेक महत्वपूर्ण उद्योग प्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर देश की 1.21 अरब से अधिक जनसंख्या के खाद्यान व खाद्य पदार्थो की आपूर्ति कृषि क्षेत्र से ही की जाती है। करोड़ों पशुओं को प्रतिदिन चारा कृषि क्षेत्र से ही प्राप्त होता है।

डॉ. आर. के. भारतीय (2006) भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकतर लघु तथा सीमांत कृषकों खेतिहर मजदूरों तथा अन्य श्रमिकों, शिल्पियों, व्यवसायिक एवं सेवा करने वाले परिवारों का ही बाहुल्य है। परन्तु आज भी इनमें से अधिकांश परिवार गरीबी रेखा के नीचे जीवन व्यतीत कर रहे हैं! अतः यह कहा जा सकता है कि भारत का समाजिक एवं आर्थिक विकास ग्रामीण क्षेत्रों के बुनियादी विकास पर ही आधारित है। ग्रामीण विकास की अनेकोनेक समस्याएं जिनमें प्रमुख रूप से आर्थिक अधोसंरचना, कृषि, लघु एवं कुटीर उद्योग व समान्वित विकास की समस्याएं है!

शोध प्रविधि–

नरसिंहपुर जिले में स्थित मण्डियों में से निदर्शन विधि का अनुप्रयोग करते हुए जिले से सभी मण्डियों का अध्ययन कर कुछ चिन्हित मण्डियों को प्रतिक अध्ययन के लिए चुना जाएगा। मण्डियों के चयन में उनकी स्थिति कार्यक्षेत्र आदि का ध्यान रखते हुए जिले में सभी तहसीलों में से एक–एक विनियमित मण्डी तथा जिले में एक प्राथमिक स्तर में गांव में स्थित विनियमित मण्डी का चयन कर अध्ययन किया जावेगा।

मण्डी सम्बन्धी तथ्यों की जानकारी प्राप्त करने हेतु प्रश्नावली बनाकर मण्डी समिति के पदाधिकारियों एवं मण्डी सचिवो से सम्पर्क अभियान द्वारा विषय से सम्बन्धित जानकारी एकत्रित कर उपक्रम बनाया जाएगा। कृषि सम्बन्धी उत्तर प्राप्त करने के लिए स्तरवार निदर्शन विधि का प्रयोग किया जावेगा। अन्त में सांख्यिकी विश्लेषण के बाद शोधकर्ता द्वारा प्रतिवेदन

प्रस्तुत कर जाएगा इस सम्बन्ध में एकत्रित किए गये प्राथमिक द्वितीयक एंव गौर आंकड़े हेतु किया गया है।

जैविक कृषि विपणन तकनीकी में सुधार, कृषि उत्पादन में वृद्धि, मध्यस्थों की समाप्ति, कृषि विनिमय हेतु वित्तीय सुविधाएँ, कृषि उत्पाद मूल्य में वृद्धि तथा कृषि विपणन का व्यावसायिक कार्य, व्यवसायिक अनुभव, पूँजी निवेश, छोटे कृषि व्यापारियों को संरक्षण कृषि के लिए वित्तीय सुविधाएँ, व्यावसायिक प्रशिक्षण, यातायात का विकास, भण्डारण प्रक्रिया में सुधार, व्यावसायिक स्थिति का मूल्यांकन, मूल्य में स्थिरता जैसे अनुकूल प्रभाव पड़ेगा। कृषि विपणन में जमाखोरी की समाप्ति, कृषि क्षेत्र को औद्योगिक क्षेत्र मानने के साथ–साथ गांवो में कृषि उत्पाद के विक्रय हेतु आवश्यक सुविधाएँ प्रदान करने का प्रयास होगा। कृषि विपणन क्षेत्र में सहाकरी समितियों के विकास हेतु कृषि विपणन क्षेत्र में सहकारी समितियों के विकास हेतु सरकारी एजेन्सी द्वारा कम मात्रा का पूर्व निर्धारण उत्पादक व व्यापारियों से कृषि आय में वृद्धि जैसे उपायों को अपनाने से कृषि विपणन तथा कृषि उपज में उत्तरोत्तर वृद्धि होगी। कृषि उपकरणों वित्तीय सुविधाओं में वृद्धि के साथ ही अन्य आवश्यक मूलभूत सुविधाओं में विकास हेतु उपाय किये जायेगे। सहकारी विपणन व्यवस्था को प्रोत्साहन दिया जाएगा उत्पादको को उचित मूल्य दिलाए जाने के साथ ही पूंजीवादी बाजार को रोकने का प्रयास किए जाएगा, साथ ही कृषि विपणन व्यवसाय का विस्तार किया जाएगा, विस्तार के साथ ही देश वे अन्य विकसित राज्यों की कृषि विपणन के समान किया गया है।

शोध के उद्देश्यः–

1. कृषकों एवं सहकारी बैंकों की अर्थिक दशाओं का अध्ययन कर उनका जीवन स्तर ऊपर उठाने हेतु आवश्यक सुझाव प्रस्तुत करना।
2. सहकारी बैंकों के योगदान द्वारा ग्रामीण कृषि प्रक्षेत्र की समस्याओं को दूर करने का समन्वित प्रयास भी है? इसके अन्तर्गत न केवल लघु कृषकों की पहचान की जा सकेगी वरन् उन्नयन हेतु आवश्यक साधन सुझाव उपलब्ध कराना।
3. जिले में संचालित सहकारी बैंकों के विभिन्न योजनाओं से लाभान्वित कृषकों के आर्थिक विकास की दर प्राप्त कर उसकी समीक्षा करना।
4. संस्थागत बैंकों की कार्यप्रणाली एवं ब्यूह रचना का अध्ययन।
5. केन्द्रीय सहकारिता बैंक के द्वारा दी जाने वाली सहायता एवं सहयोग के फलस्वरूप हितग्राहियों के रोजगार प्रभाव का अध्ययन करना।
6. संस्थागत बैंकों द्वारा चलाये जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों का अध्ययन करना।
7. जैविक कृषि द्वारा कृषकों की आर्थिक दशा के सफलता हेतु समुचित साधनों एवं उपायो को सुझाना जिससे भविष्य में इन योजनाओं को और प्रभावशाली बनाया जा सके।

शोध सीमाएँ –

''सितीर्षुः दुस्तरम मोहा दुहुपेनाडस्मि सागरम'' ज्ञान की छोटी पनसुइया नौका से शोध के महान् सागर को पार करने की इच्छा स्वरूप मेरे प्रयास से यह शोध सामग्री निश्चय ही अध्ययन की विविध सीमाओ में संकलित है। आर्थिक विकास एक ऐसी विषयवस्तु है जिसके प्रत्येक अंश पर शोध ग्रन्थ की रचना की जा सकती है, ग्रामीण क्षेत्रों के आर्थिक विकास का स्पर्श कर आरंभिक अध्ययनकर्ता विविध रूपों में वर्णन करते है। फलतः आर्थिक विकास के किसी एक क्षेत्र को न लेकर विभिन्न स्वरूप को लेकर अध्ययन किया गया। व्यक्तिशः अध्ययनकर्ता होने के कारण अर्थ तथा समयावधि की अरूपतावश आर्थिक विकास के विभिन्न क्षेत्रों का विशद विश्लेषण सम्भव नहीं हो सका है फिर भी विषय वस्तु को पर्याप्त रूप – में स्पष्ट किया गया है।

अध्ययन के सीमा की कड़ी में आर्थिक विकास के अन्तर्गत आने वाली सभी उत्पाद वस्तुओं के उत्पादन की स्थिति पर समान ध्यान नही दिया गया है।

प्रस्तुत शोध की सीमाए नरसिंहपुर राजस्व क्षेत्र अंर्तगत आने वाले विभिन्न क्षेत्रों में केन्द्रित है। अध्ययन का क्षेत्र मूलतः 2022 के बाद की जिला सहकारी कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक का वित्तीय प्रबंधन एवं कृषि विकास में योगदान नीतियों खासतौर पर ऋण व वसूली नीतियों पर केन्द्रित है। इस तरह अध्ययन जिले के विभिन्न क्षेत्रों में स्थित बैंकों एवं उनकी ऋण व वसूली नीतियों के गतिविधियों पर केन्द्रित है।

विषयवस्तु मे अनावश्यक विस्तार से बचने के लिए और सहकारी बैंक की ऋण वसूली नीतियों साख के शोध परिणाम हासिल करने के लिए अध्ययनकर्ता ने अध्ययन का केन्द्र विविध धर्मी नरसिंहपुर जिले की सहकारी कृषि एवं ग्रामीण बैंक को बनाया गया है।

शोध का महत्व एवं कठिनाइयॉः–

कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था का आधार है जिसके समुचित विकास के बिना किसी भी प्रकार की आम जीवन से जुड़ी विकास की गतिविधियों की परिकल्पना नहीं की जा सकती।

विभिन्न स्रोतों से प्राप्त होने वाली जानकारियों के अनुसार देश का सर्वाधिक वर्ग कृषि से संबंधित है देश की कृषि व्यवस्था और कृषि नीति ऐसी है कि कृषि अभी भी पुरातन नीतियों पर आधारित है शासन और प्रशासन स्तर पर दीर्घकालिक सहकारी बैंकिंग नीतियॉ निर्मित होती है। जिनका संबंध कृषि क्षेत्र की वास्तविकता से नहीं होता। कोरे सिद्धांत पर आधारित सहकारी बैंकिंग की नीतियों के चलते कृषि आज भी नई परम्पराओं को स्वीकार नहीं कर पाती। देश के कुछ क्षेत्रों को अगर छोड़ दे तो कृषि फर्म और कृषक का नाम आते ही एक विचित्र पीड़ा का बोध होता है। भारत का किसान आज भी दो जून की रोटी के लिए मोहताज है उर्वरताविहीन खेत, लगातार घटते कृषि संसाधन, पढ़े लिखे विकासशील लोगों का कृषि से दूर हटना भौतिक संसाधनों की बढ़ती कीमतें समय अनुकूल बीज खाद एवं अन्य सहायक वस्तुए कृषि यंत्रों की भारी कीमतें उत्पादन विक्रय की सार्ख क नीति का आभाव आदि के चलते नरसिंहपुर जिले की जैविक कृषि अभी भी अधोगामी है।

विगत वर्षो में ग्रामीण विकास के उन्नयन के लिए जिला सहकारी कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक द्वारा उठाए गये प्रभावी कदमों में सबसे महत्वपूर्ण जिले के विभिन्न क्षेत्रों में कृषि बैंकों, जिनके माध्यम से कृषिकों जैविक कृषि उत्पादों का समर्थन मूल्य मिलने की गारंटी दी गई है।

प्रस्तुत अध्ययन जिला सहकारी कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक का वित्तीय प्रबंधन एवं नरसिंहपुर जिले के आर्थिक विकास में योगदान पर केन्द्रित है। जिसके पृष्टभूमि में मूलतः अध्ययन में इन विभिन्न कारणों का भी संकेतिक विवरण प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। भारतीय अर्थव्यवस्था में सहकारी बैंकों की सहभागिता को दृष्टिगत रखते हुए प्रस्तुत शोध अध्ययन के महत्व का प्रतिपादन किया जा सकता सके।

अध्ययन के दौरान विभिन्न प्रकार की कठिनाईयॉ जिनका संबंध विषय सामग्री के चयन से रहा है। आपेक्षित समंकों का संकलन न होने से विषय वस्तु में गहराई में जाना, सत्यता की परख करना एक जटिल समस्या रही। अध्ययन केन्द्र सम्पूर्ण नरसिंहपुर राजस्व क्षेत्र होने के कारण भी हर जगह का प्रतिनिधित्व स्वाभाविक रूप से सम्भव नहीं हो सका है। जिले में छोटे–छोटे ग्राहकों प्रतिनिधियों के होने के कारण आपेक्षित मात्रा में सही परिणाम नहीं हो पाता जब कृषिको उपभोक्ताओं के पास मात्र भरण पोषण के लिए कृषि उत्पाद होता है ऐसे में ग्रामीण आर्थिक विकास की परिकल्पना करना हास्यास्पद सा है अध्ययन के दौरान देखा गया कि रीवा राजस्व क्षेत्र के 70 प्रतिशत व्यापारियों का संबंध बैंकों से नहीं बल्कि छोटे साहूकारों से है कृषि ऋण के कारण कृषि ऋण का समय से भुगतान न करने के कारण कृषक मूलतः कृषि नीतियों से अनजान बने रहते है और स्वाभाविक रूप से अपने विचारों की अभिव्यक्ति करने में कतराते है। राजस्व क्षेत्र के बैंक अधिकारी कर्मचारियों के संबंध कृषकों से किसी भी प्रकार से नहीं दिखते कर्मचारियों का संबंध कागजों की खाना पूर्ति से है। जिस कारण कोरे समंकों पर आधारित अध्ययन क्षेत्र की कृषि ऋण की दशा है ऐसी स्थिति में स्वाभाविक है अध्ययन के दौरान विभिन्न प्रकार की विसंगतियों का सामना करना स्वाभाविक सा रहा।

जैविक उत्पादों का बढ़ता बाजार–

भारतीय बाजारों में जैविक उत्पादों का बाजार भले ही बहुत न हो लेकिन जैविक उत्पादों की निर्गत सम्भावनायें बढ़ती जा रहीं हैं। दुनिया में अब जैविक उत्पादों की माँग बढ़ रही है। 2015 के एक आकलन के अनुसार जैविक खाद पदार्थ और पेय का अर्न्तराष्ट्रीय बाजार करीब 32 मिलियन अमेरिकी डॉलर हैं। अमेरिका, जर्मनी, फ्रांस इसके बडे क्षेत्र है। यूरोप और चीन का नम्बर इनके बाद है। प्रतिव्यक्ति खपत के लिहाज से स्विटजरलैण्ड, डैनमार्क, और लग्समबर्ग अग्रणी है। इसकी पूर्ति के लिये आज दुनिया के 170 देशों के करीब 431 लाख हेक्टेयर भूमि को प्रमाणिक जैविक कृषि क्षेत्र में बदला जा चुका है।

हालाकि यह रकबा कृषि उपयोग में आ रही कुल वैश्विक भूमि का मात्र एक फीसदी है। इस रकबे में ओसिनिया, यूरोप और लेटिन अमेरिका के बाद क्रमशः एशिया, उत्तरी अमेरिका तथा अफ्रीका का योगदान सबसे ज्यादा है। ऑस्ट्रेलिया, अमेरिका और अर्जेन्टीना ने अपनी–अपनी भूमि को जैविक रूप में बचाकर रखा है। निश्चित तौर पर इसमें खेती के अलावा जंगल का रकबा भी शामिल है। जैविक खेती सेहत और पर्यावरण संरक्षण के लिये अत्यन्त लाभकारी है। देशी खेती और खेतिहर को ताकत देने में भी इससे मदद मिलेगी।

जैविक कृषि के लाभ– जैविक कृषि के आर्थिक, सामाजिक, पर्यावरणीय लाभ निम्नलिखित हैं–

1. जैविक कृषि से भूमि की उपजाऊ क्षमता में वृद्धि आती है।
2. जैविक कृषि से सिंचाई अन्तराल में वृद्धि होती है व अधिक समय तक नयी रहती है।
3. पशुओं पर निर्भरता रहती है।
4. जैविक कृषि में रासायनिक खाद पर निर्भरता कम होने से उत्पादन लागत में कमी आ जाती है। जिससे आय मे वृद्धि होती है।

5. जैविक कृषि से दीर्घकाल में फसलों की उत्पादकता में वृद्धि होती है।
6. जैविक कृषि से गुणवत्ता युक्त खाद्यान प्राप्त होते है।
7. भूमि के जल स्तर में वृद्धि होती है।
8. प्रदूषण में कमी आती है।
9. बीमारियों मे कमी आती है।
10. जैविक कृषि पद्धति से फसल उत्पादन की लागत में कमी आती है एवं आय में वृद्धि होती है।
11. जैविक कृषि से पर्यावरण पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पडता।

निष्कर्षः–

अध्ययन उपरान्त यह ज्ञात होता है कि भविष्य को यदि स्वस्थ बनाना है तो रसायनों को कम से कम उपयोग कर जैविक पदार्थों का अधिक से अधिक उपयोग करना होगा। कृषि लागत को कम करने हेतु व मृदा को संरक्षित करने हेतु जैविक कृषि पद्धति अत्यन्त सरल उपाय है। अधिक कीमतों वाले रसायनिक उर्वरक कृषकों की आर्थिक स्थिति को प्रभावित नहीं कर सकेगें। क्योंकि वर्तमान मे रसायनों व कीटनाशकों के उपयोग से उत्पादन की तुलना में कृषि लागतें अधिक आती है। जबकि जैविक उर्वरकों के माध्यम से कृषि लागतें कृषि के अनुकूल होती है व किसी भी क्षेत्र पर नकारात्मक प्रभाव नहीं पडता है। कृषकों को अधिक से अधिक जैविक कृषि कार्यों को करना चाहिये ताकि कृषि लागतें आय के अनुकूल रहे व भूमि, मृदा, जल, वायु पर्यावरण मानव स्वास्थ आदि को भविष्य के परिपेक्ष में सकारात्मक बनाया जा सके। कृषि विपणन तकनीकी में सुधार, कृषि उत्पादन में वृद्धि, मध्यस्थों की समाप्ति, कृषि विनिमय हेतु वित्तीय सुविधाऍं, कृषि उत्पाद मूल्य में वृद्धि तथा कृषि विपणन का व्यावसायिक कार्य, व्यवसायिक अनुभव, पूॅंजी निवेश, छोटे कृषि व्यापारियों को संरक्षण कृषि के लिए वित्तीय सुविधाऍं, व्यावसायिक प्रशिक्षण, यातायात का विकास, भण्डारण प्रक्रिया में सुधार, व्यावसायिक स्थिति का मूल्यांकन, मूल्य में स्थिरता जैसे अनुकूल प्रभाव पड़ेगा। कृषि विपणन में जमाखोरी की समाप्ति, कृषि क्षेत्र को औद्योगिक क्षेत्र मानने के साथ–साथ गांवो में कृषि उत्पाद के विक्रय हेतु आवश्यक सुविधाऍं प्रदान करने का प्रयास होगा। कृषि विपणन क्षेत्र में सहाकरी समितियों के विकास हेतु कृषि विपणन क्षेत्र में सहकारी समितियों के विकास हेतु सरकारी एजेन्सी द्वारा कम मात्रा का पूर्व निर्धारण उत्पादक व व्यापारियों से कृषि आय में वृद्धि जैसे उपायों को अपनाने से कृषि विपणन तथा कृषि उपज में उत्तरोत्तर वृद्धि होगी। कृषि उपकरणों वित्तीय सुविधाओं में वृद्धि के साथ ही अन्य आवश्यक मूलभूत सुविधाओं में विकास हेतु उपाय किये जायेगे। सहकारी विपणन व्यवस्था को प्रोत्साहन दिया जाएगा उत्पादको को उचित मूल्य दिलाए जाने के साथ ही पूंजीवादी बाजार को रोकने का प्रयास किए जाएगा, साथ ही कृषि विपणन व्यवसाय का विस्तार किया जाएगा, विस्तार के साथ ही देश वे अन्य विकसित राज्यों की कृषि विपणन के समान किया जाएगा।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः–

1. अग्रवाल एन.एल., भारतीय कृषि का अर्धतंत्र, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी,
2. अग्रवाल, एन.एल. कृषि अर्थशास्त्र राजस्थान हिन्दी ग्रंन्थ अकादमी जयपुर
3. भारती एवं पाण्डेय भारतीय अर्थव्यवस्था मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी
4. चौहान, शिवध्यान सिंह भारतीय व्यापार साहित्य भवन प्रकाशन, आगरा
5. चतुर्वेदी टी.एन. तुलनात्मक आर्थिक पद्धतियॉ राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी जयपुर
6. जैन, एस.जी. विपणन के सिद्धांत साहित्य भवन आगरा
7. जैन, पी.सी. एवं जैन टेण्डका विपणन प्रबंध नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली
8. खंडेला मानचन्द्र, उदारीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था साहित्य भवन प्रकाशन आगरा
9. मदादा एवं बोरवाल विपणन के सिद्धान्त रमेश बुक डिपो जयपुर
10. श्रीवास्तव, पी.के. विपणन के सिद्धान्त नेशलन पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली
11. सिंघई जी.सी. एवं मिश्रा, जी.पी. अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार एवं वित्त साहित्य भवन आगरा
12. त्रिवेदी, इन्द्रवर्धन एवं जटाना, रेणु विदेशी व्यापार एवं विनिमय राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।
13. वान हेबलर, गाट फ्रायड, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का सिद्धांत उ.प्र. हिन्दी सस्थान
14. झुनझुनवाला, भरत : भारतीय अर्थव्यवस्था समीझात्मक अध्ययन, राज्यपाल एण्ड सन्स कश्मीरी गेट, नई दिल्ली।
15. लाल, एस. एन., लाल एस. के. : भारतीय अर्थव्यवस्था सर्वेक्षण तथा विश्लेषण, शिवम पब्लिसर्स 2016।
16. गुप्त, शिवभूषण : कृषि अर्थशास्त्र एस.वी.पी.डी. पब्लिसर्स हाऊस 2010–11।
17. ओझा, बी.एस. ''भारत में आर्थिक पर्यावरण'' रमेश बुक डिपो जयपुर।
18. शुल्क चन्द्र प्रकाश ''जैविक कृषि'' हिन्दी बुक हाऊस।

19. योजना, ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।
20. कुरूक्षेत्र, ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।
21. आर्थिक सर्वेक्षण 2016–17
22- *www.Pib.nic.in 2*
23- *www.indiawaterportal.org 3,7,9,10*
24- *www.scientific world.in*
25- *www.prawakta.com 4,5,6* .